## विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

# गरीबी से बड़ा कोई अभिशाप नहीं, इससे मुक्ति दिलाने में शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति व पर्यावरण से बेहतर कोई उपाय नहीं

मेरा जीवन एक साधारण गांव में शुरू हुआ। जहां अकूत गरीबी थी। मेरे पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे और मैं प्राय: उनको इस संघर्ष में देखता था कि कैसे वे एक ओर अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे और दूसरी ओर सरकारी अफसरों और नेताओं से हाथ जोड़कर अपने पदस्थापन स्थान के विकास के लिए याचना करते थे।मैंने तब इस बात को स्वयं जिया कि कैसे गरीबी न केवल जीवन की गुणवत्ता को कम करती है,बल्कि यह व्यक्ति की आत्मा को भी छलनी कर देती है। इस अभिशाप से मुक्ति पाने की छटपटाहट में मैंने शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण के महत्व को आत्मसात और क्रियान्वित किया। शिक्षा ने मेरे लिए विश्व के बंद दरवाजे खोले। शिक्षा मेरे लिए ज्ञान की वह रोशनी लेकर आई,जिसने मुझे अपनी स्थितियों को समझने और उन्हें बदलने की रणनीति और शक्ति दी। स्वास्थ्य ने मुझे यह सिखाया कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ और निर्मल मन निवास करता है,और यही निर्मल मन व्यक्ति के समग्र कल्याण का बीज है। शांति ने मुझे आंतरिक संतुलन और सामंजस्य के चमत्कारी प्रभाव को समझाया,जो हमारे भीतर सहयोग और सद्भावना को बढ़ाता है। हमारे आसपास का पर्यावरण और उसको बेहतर रखने के प्रति सचेत रहनेसे मुझे यह समझ पाना सुलभ हुआ कि प्राकृतिक संसाधन हमारे जीवन केमूल आधार हैं और इनकी सुरक्षा करना हमारी असल में हमारी अपनी भलाई के लिए अनिवार्य है। इस प्रकार,मेरी कहानीआपकोयह सिखा सकती है कि गरीबी से लड़ने और विजय पानेहेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण कोसाथ लेकर चलना होगा। ये चारों स्तंभ व्यक्तिगत जीवन के साथ ही समग्र समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। जब हम इन स्तंभों को सशक्त बनाते हैं, तो हम न केवल गरीबी के विरुद्ध एक प्रबल लड़ाई लड़ सकते हैं,बल्कि एक ऐसे समाज की नींव रख सकते हैं जो अधिक समृद्ध, स्वस्थ, और शांतिपूर्ण हो। अपनी जीवन यात्रा में मैंने यह भी सीखा कि जब समाज एक साथ मिलकर काम करता है, तो बदलाव लाना तुलनात्मक रूप से शीघ्रतापूर्वक संभव हो पाता है। शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना, शांति की दिशा में काम करना और पर्यावरण की रक्षा करना–ये सभी कार्य तब और अधिक प्रभावी होते हैं जब हम सभी इसमें साझा प्रयत्न करते हैं।मेरी कहानी यह भी दर्शाती है कि गरीबी एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसे पराजित करने के लिए हमारे पास शक्तिशाली रणनीतियां उपलब्ध हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति, और पर्यावरण के माध्यम से हम व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बना सकते हैं, और साथ ही पूरे समाज और राष्ट्र को भी उन्नित की ओर ले जा सकते हैं। इस दिशा में मिलजुलकरकिया गया कार्य एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा सकता है जहाँ गरीबी मात्र इतिहास का हिस्सा बन कर रह जाए। शिक्षा का महत्व तो जगजाहिर है। यह व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होती है। एक अनपढ़ व्यक्ति जो अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होता है, उसे प्राय: शोषण का सामना करना पड़ता है। जब वही व्यक्ति शिक्षित हो जाता है, तो वह न केवल अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है, बल्कि अपने जीवन की बेहतरी हेतु सही निर्णय ले सकता है। उदाहरण के लिए, एक छोटे गांव की एक युवती जिसने शिक्षा प्राप्त की और अपने गांव में एक स्कूल खोला, उसने अपना जीवन तो बदला ही साथही अपने गाँव के बच्चों को भी शिक्षित करने का मार्ग प्रशस्त किया। शिक्षा के साथ ही स्वास्थ्य भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य साधन है। बीमारियों से मुक्त एक स्वस्थ व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सक्षम होता है और तुलनात्मक रूप से अधिक आय अर्जित कर सकता है। इसके उलट, एक बीमार व्यक्ति अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति दुष्प्रभावित होती है। स्वास्थ्य सेवाओं का सुलभ होना और उनकी गुणवत्ता दोनों ही महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ समाज ही एक समृद्ध और सुखी समाज की नींव रख सकता है। एक छोटे गाँव में,जहाँ पहले स्वास्थ्य सेवाएं नहीं थीं, वहाँ एक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना से न केवल बीमारियों का बेहतर प्रबंधन हुआ, बल्कि लोगों की जीवन गुणवत्ता में भी सुधार हुआ। शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ ही शांति भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य घटक है। एक शांतिपूर्ण समाज में,व्यक्तियों, परिवारों और समाज को अपनी क्षमताओं को विकसित करने और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने के बेहतर अवसरप्राप्त होता है। जिस समाज में हिंसा और अशांति होती हैउसमें सतत विकास की संभावनाएं घट जाती हैं और गरीबी बढ़ती जाती है। फलत:, शांति को बढ़ावा देना और आपसी संघर्षों को कम करना गरीबी से मुक्ति के लिए अनिवार्य है। गरीबी को मिटाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और शांति के साथ-साथ पर्यावरण का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरणीय स्थिरता से हमारे संसाधन सुरक्षित रहते हैं, जो कि सतत आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिकीय विकास और लोगों के कल्याण में मौलिक भूमिका निभाते हैं। जब पर्यावरण संरक्षित होता है, तो यह खाद्य सुरक्षा में योगदान देता है,प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करता है,और स्वच्छ जल,वायुऔर मृदाप्रदान करता है। इस प्रकार,पर्यावरणीय स्थिरता प्राकृतिक पारिस्थितिकीय तंत्रोंके साथ ही मानव समाज के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता के लिए भी अनिवार्य है। इसलिए,गरीबी उन्मूलन की हमारी रणनीतियों में पर्यावरणीय संरक्षण को भी प्रमुख स्थान देना चाहिए। प्राकृतिक जलवायु समाधान जिसमें कार्बन पृथक्करण और संचय, जैव-विविधता का संरक्षण, और आजीविका में सुधार शामिल हैं, एक ऐसा रास्ता देते हैं जो गरीबी उन्मूलन के लिए आवश्यक संसाधनों का सुदृढीकरण भी करते हैं।

**शिक्षा के साथ ही स्वास्थ्य भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य साधन है। बीमारियों से मुक्त एक स्वस्थ व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सक्षम होता है और तुलनात्मक रूप से अधिक आय अर्जित कर सकता है। इसके उलट, एक बीमार व्यक्ति अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति दुष्प्रभावित होती है।**

इन चारों स्तंभों – शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण – को सदृढ़ करने से ही गरीबी के चक्र को तोड़ा जा सकता है और एक समृद्ध समाज की नींव रखी जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सरकारें और समाज के सभी वर्ग इन क्षेत्रों में प्राथमिकता से निवेश करें। इन मूलभूत कारकों को सम्हाली बिना गरीबी के विरुद्ध एक प्रभावी और निर्णायक लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। यदि एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन नहीं दे सकता, तो वास्तव में उसके पास देने के लिए और क्या बचता है? ये सभी तत्व न केवल एक समृद्ध समाज की नींव हैं,बल्कि ये हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण हैं। एक व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के रूप मेंहमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम इन मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करें और अपने नागरिकों को एक सुरक्षित, स्वस्थ, और शिक्षित भविष्य प्रदान करें। इसी विश्वास के साथ हम एक श्रृंखलाबद्ध विश्लेषण प्रारम्भ कर रहे हैं कि यह ज्ञान व्यक्तियों,परिवारों समाज और सरकारों को गरीबी उन्मूलन के लिए एक नवाचारी और प्रमाण-आधारित दिशा प्रदान करेगा। यदि हमारा देश अपने नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को तो बढ़ाएगा ही साथ ही समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करेगा। इन मूलभूत कारकों को ध्यान रखकर तय की गई प्राथमिकता ही वह आधार है जिस पर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है। इस विश्लेषण में हम आने वाले समय में यह स्पष्ट करेंगे कि कैसे शिक्षा नागरिकों को नई तकनीकें और विचार सीखने में मदद कर सकती है,स्वास्थ्य सेवाएं कैसे उन्हें अधिक उत्पादक बना सकती हैं,पर्यावरणीय संरक्षण कैसे संसाधनों की रक्षा कर सकता है और शांति कैसे हमारे समाज को अधिक सहयोगी और सद्भावपूर्ण बना सकती है। हम उम्मीद करते हैं कि इस विश्लेषण के माध्यम से प्राप्तनिष्कर्ष समाज और सरकारों को इन क्षेत्रों में नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे,जिससे गरीबी कम होने के साथ ही देश की समठा प्रगति भी सुनिश्चित होगी। हम इस श्रृंखलाबद्ध विश्लेषण को इस आशा और विश्वास के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि यह ज्ञान, गरीबी को मिटाने के लिए समाज और सरकारों को एक नई दिशा देगा। जब एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि समाज के समठा विकास को भी सुनिश्चित करता है। ये सभी तत्व एक समृद्ध समाज की नींव हैं और हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं।इससे न केवल हमारे देश की समठा उन्नित सुनिश्चित होगी, बल्कि यह हमारे नागरिकों को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और सक्षम बनाने में भी मदद करेगा। यह आवश्यक है कि हम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, और शांति के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा दें और इन्हें अपनी राष्ट्रीय नीतियों का केंद्र बिंदु बनाएं। इस प्रकार, हम एक ऐसे भविष्य की ओर अठासर होंगे जहाँ हर नागरिक के पास अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने का अवसर होगा।हम इस बात को समझते हैं कि गरीबी एक जटिल समस्या है जिसका समाधान एक क्षेत्र में कार्य करने से नहीं, अपितु एक समन्वित और समठा दृष्टिकोण से ही हो सकता है। इसलिएहमारी श्रृंखला विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के विचारों और अनुभवों को साझा करेगी, और शोध-आधारित विचारों को आगे लायेगी, जिससे नवाचार और सुधार के लिए प्रेरणा मिल सके।अंत में, हम आशा करते हैं कि यह श्रृंखला न केवल जागरूकता बढ़ाएगी बल्कि समाज और सरकारों को उन नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी जो वास्तव में गरीबी को कम करने और हमारे देश को एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होंगे।

**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय**
**( इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर )**
**( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं। )**

# सरकार ने समझा जल स्त्रोतों का महत्व

## मुख्यमंत्री की दूरदर्शी पहलः वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान

नवधा परदेशी

**मरुधरा** के दक्षिण छोर पर बसा प्रतापगढ़ जिला अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ प्राकृति के सम्पदा व जल स्त्रोतोंमें भी सुसमृद्ध है। इस जनजातीय क्षेत्र की जीवन रेखा है जाखम बाँध। जाखम सिर्फ पानी का भंडार नहीं, बल्कि प्रतापगढ़ के सामाजिक, भौगोलिक और आर्थिक जीवन से जुड़ा हुआ बहुमूल्य संसाधन भी है।

जल स्त्रोत सिर्फ ग्रामीण भारत के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण देश के लिए आधार हैं। बढ़ते शहरीकरण, घटती वर्षा और गिरते भूजल स्तर ने जल संकट को एक गंभीर चुनौती बना दिया है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो गया है कि हम पारंपरिक जल स्त्रोतों की ओर लौटें, वर्षा जल का संरक्षण करें और जनसहभागिता के साथ जल संरक्षण के लिए प्रयासों को मजबूत करें। इसी दिशा में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा द्वारा शुरू किया गया "वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" एक दूरदर्शी पहल है। यह अभियान केवल सरकार का अभियान नहीं, बल्कि जन-जन को जागरूक और प्रेरित करने का एक सामूहिक प्रयास है। इसका उद्देश्य स्पष्ट है – जल स्त्रोतों का संरक्षण, भूजल स्तर का पुनर्जीवन और एक ऐसे भविष्य की नींव रखना जहाँ हर बूँद का मूल्य समझा जाए। जल संरक्षण अब विकल्प नहीं, अनिवार्यता बन चुका है। जाखम बाँध जैसे उदाहरण हमें सिखाते हैं कि जब हम जल को बचाते हैं, तो हम जीवन को बचाते हैं। "वंदे गंगा" जैसे अभियानों से यह विश्वास जागता है कि सामूहिक प्रयासों से बदलाव संभव है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ करोड़ों लोग खेती पर निर्भर हैं, जल स्त्रोतों की उपलब्धता ही फसल का जीवन तय

**■ समृद्ध वन व हरियाली के बीच खुशहाली का प्रतीक है, विकास की गंगा-जाखम बांध**

करती है। दु:ख की बात यह है कि आधुनिक विकास के नाम पर हमने इन स्त्रोतों की अनदेखी की है। अंधाधुंध दोहन, शहरीकरण और लापरवाह जल प्रबंधन ने इन जीवनदायिनी संरचनाओं को संकट में डाल दिया है। भूमिगत जलस्तर गिरता जा रहा है, प्राकृतिक जलाशय सिकुड़ते जा रहे हैं और जलवायु परिवर्तन इस संकट को और भी गहरा बना रहा है। जल के बिना जीवन की कोई कल्पना नहीं – यह सिर्फ एक कथन नहीं, बल्कि सच्चाई है। राजस्थान सरकार ने समझा कि यह आज ज़रूरत है कि हम सभी इस दिशा में आगे आएं – सरकार, समाज और हर व्यक्ति – ताकि अगली पीढ़ी को जल की कमी नहीं, शुद्ध और साफ़ जल का उपहार मिले। क्योंकि जल है, तभी कल है।जनजाति क्षेत्र में हज़ारों लोगों को लाभान्वित कर रहा जाखम बाँध: कांठल की जीवन रेखा पक्षियों की आवाज, पर्वतों का फैलाव, मानसून में बादलों की अद्वितीय छाया के बीच जाखम बांध एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है।

कांठल प्रदेश में घने जंगलों और इसके किनारों पर असंख्य झाड़ियों के साथ बारहमासी जाखम नदी सीतामाता अभयारण्य और कांठल क्षेत्र की जीवन रेखा है। बांध क्षेत्र की एक प्रमुख सिंचाई परियोजना है। जाखम सिंचाई परियोजना राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में स्थित एक प्रमुख जल परियोजना है, जो जाखम नदी पर निर्मित की गई है। इसका निर्माण 1010 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले जलठाहण क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए किया गया है। परियोजना का कुल अनुमानित ठॉस स्टोरेज 142.02 मिलियन क्यूबिक मीटर और लाइव स्टोरेज 132.28 मिलियन क्यूबिक मीटर है। यह बांध लगभग 81 मीटर ऊंचा है। यह परियोजना लगभग 28 हज़ार 319 हेक्टेयर कृषि भूमि को सिंचाई सुविधा प्रदान करती है और औसतन 23 हज़ार 505 हेक्टेयर क्षेत्र को प्रतिवर्ष सिंचित करती है। इसमें दो मुख्य नहरें हैं – बाएं तरफ 39.9 किलोमीटर और दाएं तरफ 34.12 किलोमीटर लंबी – जिनसे क्रमश: 7.53 और 3.54 क्यूमेक्स जल आपूर्ति होती है। परियोजना के अंतर्गत कुल 121 गांवों को लाभ मिलता है, जिनकी कुल अनुमानित जनसंख्या लगभग 1.1 लाख है। इसका महत्त्व देखते हुए बजट 2024-25 में राज्य सरकार ने 3 हज़ार 530 करोड़ रुपये की लागत से जाखम बाँध आधारित वृहद पेयजल परियोजना की घोषणा की है। इस परियोजना के तहत चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर जैसे ज़िलों को शुद्ध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। यह परियोजना राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र में जल संकट से निपटने और जनजातीय व ठामीण आबादी की जीवन गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

**लेखक परिचय**
**नवधा परदेशी**
**सहा. जनसंपर्क अधिकारी**
**सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान**

# फादर्स डे पितृ सम्मान दिवस

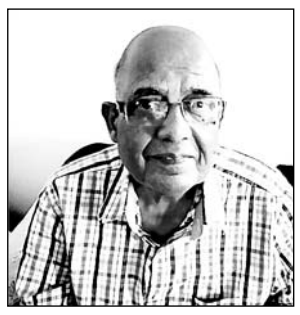

डॉ. जे.के. गर्ग

किसी ने पूछा–'वो कौन सी जगह है जहाँ हर गलती, हर जुर्म और हर गुनाह माफ़ हो जाता है? नन्हा बच्चा मुस्कुराया और बोला–'मेरे पापा का दिल।' सच्चाई तो यही है कि हम अपने पापा की छत्र छाया में रह कर कब बडे और युवा हो जाते हैं यह हमको मालूम ही नही हो पाता है। नि:संदेह पापा, पिता, अब्बू, डेडी ही दिन-रात अपने बच्चे के लिए जीते-मरते रहते हैं, उनकी हर इच्छा को पूरा करने वाले के लिये हर सम्भव कोशिश भी करते हैं। पिता के जीवन का एक मात्र काम होता है अपने बेटी-बेटों को जीवन की सारी खुशियाँ देना और उन्हें एक कामयाब एवं योग्य मनुष्य बनाना, वे अपने बच्चों की ख़ुशियों के खातिर खुद की सारी खुशियाँओ को छोड़ देते हैं, खुद अभाव और तकलीफ में रह कर अपने बच्चों को सुख-सुविधाओं के समस्त साधन उपलब्ध करवातें हैं। बच्चों के लालन-पालन, परवरिश, शिक्षा आदि में माँ के योगदान के साथ-साथ पिता का योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता है। वास्तिवकता तो यही है कि पिता ही बालक के लिये एक सच्चा दोस्त, पथ प्रदर्शक, गाइड, रोलमोडल एवं गुरु भी होता है। हर पिता अपने बेटे-बेटियों को जीवन में आने वाली बाधाओं का सामना करने के काबिल बनाता है और उनकी शिक्षा के लिये भरपूर प्रयास करता है। पिता ही अपने बच्चों को अच्छे-बुरे का भेद समझाता है। किसी ने सही ही कहा है कि 'पिता भगवान् के दुवारा भेजे गये धरती पर देव दूत ही होते हैं'। हमारे वेद, पुराण, दर्शनशास्त्र, स्मृतियां, महाकाव्य, उपनिषद आदि सब माता-पिता की अपार महिमा के गुणगान से भरे पड़े हैं।

असंख्य ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, पंडितों, महात्माओं, विद्वानों, दर्शन शास्त्रियों, साहित्यकारों और कलाकारों ने भी माता-पिता के प्रति पैदा होने वाली अनुभूतियों को कलमबद्ध करने का भरसक प्रयास किया है। सच्चाई तो यही है कि–"त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या च द्रविणम त्वमेव, त्वमेव सर्वमम देव देव:।"

हमारी संस्क्रति में तीन प्रकार के ऋण यानि राष्ट्रऋण, पित्रऋण और गुरु ऋण का उल्लेख किया जाता है एवं हर इन्सान से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने सुकृत्यों से इन तीनों ऋण से ऊऋण होने का भरपूर प्रयास करें। सच्चाई तो यही है कि बच्चें अपने पिताजी के कर्ज से अपने आपको कभी भी मुक्त नहीं कर सकते हैं। हम सभी को पित्रऋण को चुकाने के लिये हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए तथा अपने पिताजी की सुख-सुविधाओं का ध्यान रख उनकी देख भाल करनी चाहिए।

फादर्स डे या पितृ सम्मान दिवस मात्र पिताजी का ही नहीं वरन दादाजी, नानाजी, पड दादी-दादाजी, पड नानी-नाजी एवं समस्त पितृ तुल्य स्वजनों, मित्रों एवम् समस्त परिचितों के प्रति सम्मान-आदर व्यक्त करने का दिवस है। दुनियांभर में फादर्स डे पर सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष यानि युवक-युवतियां, बेटे-बेटियां, प्रोढ़ स्त्री-पुरुष अपने बुजुर्ग पिता और समस्त पितृ तुल्यों के प्रति उनकी सेवाओं, योगदान, मार्गदर्शन को याद कर अपना आभार और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

फादर्स डे पर स्वजन अपने पिताजी एवम् पितृ तुल्य व्यक्तियों को बाहर सैर सपाटे के लिये ले जाते हैं तथा उनके साथ समय बिता कर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि आप अकेले नहीं हैं हम सभी बच्चें आपके साथ है तथा आपकी सेवा सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी है। फादर्स डे पर बच्चें, चाहे वे कहीं भी हो उन्हें उपहार भेज कर इस बात की शपथ लेते हैं कि वे सभी उनके प्रति अपने सभी कर्तव्यों को जीवन पर्यन्त पुरी निष्ठा के साथ पूरा करेगें। मुझे कई बार अमेरिका जाने का अवसर मिला है वहां पर भारतीय समुदाय फादर्स डे पर विशाल स्तर पर पिकनिक का आयोजन करता हैं एवं इस पिकनिक में सभी पुरुष वर्ग के बुजुगों को सम्मानित कर उनके योगदान को याद कर उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हें, इस अवसर पिता एवम् पितृतुल्य व्यक्तियों के चेहरों पर आई मुस्कान जहाँ उन्हें आत्मसंतोष तो देती है वहीं उनको युवाओं के समान स्फूर्ति भी प्रदान करती हैं